अध्याय 31

अय्यूब के नैतिक जीवन का दाव किया गया

सेमुएल कॉक्स ने लिखा, ''यह अध्याय शायद पूरी कविता में सबसे सुन्दर है और इसका विषय अति उत्तम है और जहां इसे रखा हुआ उस के योग्य है।''[1] यह बाइबल में मिलने वाले पात्र की तालिका के रूप में व्यक्तिगत सदाचारों के सबसे बड़े कथनों में से एक है। फ्रांसिस आई. एंडरसन ने इसमें जोड़ा है, ''यह अनमोल नसीहत 'अय्यूब के वचनों' का उपयुक्त समापन है (आयत 40)। यह नकारात्मक अंगीकार के रूप में एक सच्चाई है। यह तरीका प्राचीन न्यायशास्त्र में प्रसिद्ध था।''[2]

अपनी आंखों के साथ अय्यूब की वाचा (31:1-4)

1''मैं ने अपनी आँखों के साथ वाचा बाँधी है, फिर मैं किसी कुँवारी पर कैसे आँखें लगाऊँ? 2क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग से कौन सा भाग और सर्वशक्तिमान ऊपर से कौन सी सम्पत्ति बाँटता है? 3क्या वह कुटिल मनुष्यों के लिये विपत्ति और अनर्थ काम करनेवालों के लिये सत्यानाश का कारण नहीं है? 4क्या वह मेरी गति नहीं देखता और क्या वह मेरे पग पग को नहीं गिनता?''

आयतें 1-3. वाचा (*b^{e}rith, बेरिथ*) दो पक्षों के बीच किया गया वायदा होता है जिसमें उसे मानने का दायित्व होता है। **बांधी** (*karath, काराथ*) शब्द का अधिक अक्षरशः अनुवाद ''काटी'' हो सकता है। ''एक वाचा काटी'' की अभिव्यक्ति वाचा के समारोह में बली के पशुओं के काटे जाने की प्राचीन परम्परा से लिया गया था (उत्पत्ति 15:10, 18; यिर्मयाह 34:18)।[3] अय्यूब ने देखा कि आंखें ''दिल तक जाने का मार्ग'' थीं (उत्पत्ति 3:6; 2 शमूएल 11:2; मत्ती 5:28)।[4] इसलिए उसने अपनी **आंखों** के साथ **किसी कुंवारी** के लिए लालायित न होने की वाचा बांधी।

यह आयतें हमें यूसुफ के धर्मी आचरण का स्मरण दिलाती हैं जब पोतीपर की पत्नी ने उसे फुसलाने का प्रयास किया। जब उसने उसे उसके साथ कुकर्म करने के लिए फुसलाना चाहा, तो यूसुफ ने उत्तर दिया, ''मैं ऐसी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्यों बनूं?'' (उत्पत्ति 39:9)। परस्त्री/परपुरुष गमन और व्यभिचार केवल व्यक्ति और पत्नी/पति के विरुद्ध किए जाने वाले पाप ही नहीं हैं बल्कि यह परमेश्वर के विरुद्ध किए जाने वाले पाप भी हैं! इनके कारण ऐसे **कुटिल** लोगों पर **विपत्ति** और **सत्यानाश** आता है। परमेश्वर की ओर से दण्ड पापी को परमेश्वर की ओर से मिला **भाग** और **सम्पत्ति** है (20:29 पर टिप्पणियां देखें; 24:18; 27:13)।

आयत 4. ''क्या वह मेरी गति नहीं देखता और क्या वह मेरे पग-पग को नहीं गिनता?'' अय्यूब ने देखा कि परमेश्वर उसके हर विचार और कार्य को पूरी तरह से जानता था

(14:16; देखें 34:21; भजन संहिता 33:13–15; 119:168; 139:1–4)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा, ''सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुली और प्रगट हैं'' (इब्रानियों 4:13)।

अय्यूब की खराई (31:5–8)

5''यदि मैं व्यर्थ चाल चलता हूँ, या कपट करने के लिये मेरे पैर दौड़े हों; 6(तो मैं धर्म के तराजू में तौला जाऊँ, ताकि परमेश्वर मेरी खराई को जान ले)। 7यदि मेरे पग मार्ग से बहक गए हों, और मेरा मन मेरी आँखों की देखी चाल चला हो, या मेरे हाथों को कुछ कलंक लगा हो; 8तो मैं बीज बोऊँ, परन्तु दूसरा खाए; वरन् मेरे खेत की उपज उखाड़ डाली जाए।''

आयतें 5, 6. ये आयतें इस अध्याय के कई सशर्त (''यदि ... तो'') वाक्यों में पहले हैं। आयत 4 वाले **गति** और **पग** की तरह **चाल** और **पैर** अय्यूब की जीवन शैली का संकेत देने के लिए है। बेशक अय्यूब ने माना कि वह **व्यर्थ** या **कपट** में शामिल नहीं था। ''व्यर्थ'' (*shaw^{e}', शॉव*) किसी ऐसी बात को दर्शाता है जो बेकार या किसी काम की न हो। विशेषकर इसका इस्तेमाल अनुचित बोलचाल, जैसे अदालत में झूठी गवाही देना (निर्गमन 23:1) और हिंसा करने वाले व्यक्ति द्वारा झूठ बोला जाना (भजन संहिता 144:8) के लिए होता है। इस शब्द का इस्तेमाल झूठी आराधना के लिए भी किया जाता है (यशायाह 1:13; यिर्मयाह 18:15)। ''कपट'' (*mirmah, मिरमाह*) का अनुवाद ''छल'' भी हो सकता है।[5]

विपत्तियों के आरम्भ से ही अय्यूब ने अपनी **खराई** को निरन्तर बनाए रखा (2:9, 10; 27:5)। यहां पर उसने **परमेश्वर** से उसे **तोल**ने के लिए **धर्म के तराजू** का इस्तेमाल करके उसकी खराई को साबित करने को कहा। मूसा की व्यवस्था में ''सच्चा तराजू, धर्म के भटकने, सच्चा ऐपा, और धर्म का हीन'' (लैव्यव्यवस्था 19:36) रखने की आज्ञा थी। जॉन ई. हार्टले ने लिखा, ''बुद्धि की परम्परा में तराजू व्यक्ति के अपने अनुमान के विपरीत मानवीय उद्देश्यों की परमेश्वर की संक्षिप्त परख का प्रतीक है, जो इतना पक्षपातपूर्ण है कि इसे अविश्वसनीय माना जाता है।''[6] नीतिवचन 21:2 कहता है, ''मनुष्य का सारा चालचलन अपनी दृष्टि में तो ठीक होता है, परन्तु यहोवा मन को जांचता है'' (देखें नीतिवचन 16:2; 24:12)। मिस्र की मृतकों की पुस्तक के सामान्य ज्ञान में यह दिखाने के लिए कि यह पाप से भारी था या नहीं, मरे हुए व्यक्ति के हृदय को पंख के साथ तोला जाता था।[7]

आयतें 7, 8. अय्यूब ने लगातार तीन दावे किए। (1) उसके **पग मार्ग से बहके** नहीं थे। यानी उसने परमेश्वर के नियमों के अनुसार चलना नहीं छोड़ा था। (2) उसका **मन** उसकी **आंखों की देखी चाल** नहीं चला था। वह आंखों की अभिलाषा के आगे दबा नहीं था (देखें 31:1; 1 यूहन्ना 2:16)। (3) उसके **हाथों** पर कोई **कलंक** नहीं था यानी वे पाप से रंगे नहीं थे (देखें 11:14; 16:17; 22:30; भजन संहिता 24:3, 4)। अय्यूब यही कहता रहा कि उसकी ''कथनी और करनी एक समान'' थी।

यदि अय्यूब ने पाप किया होता तो उसने उस पाप के न्यायसंगत परिणाम भुगतने को तैयार

होना था। यह दण्ड खेतीबाड़ी की भाषा वाला है (देखें लैव्यव्यवस्था 26:16; मीका 6:15)।

अय्यूब की वैवाहिक विश्वसनीयता (31:9–12)

[9]"यदि मेरा हृदय किसी स्त्री पर मोहित हो गया हो, और मैं अपने पड़ोसी के द्वार पर घात में बैठा हूँ; [10]तो मेरी स्त्री दूसरे के लिये पीसे, और पराए पुरुष उसको भ्रष्ट करें। [11]क्योंकि वह तो महापाप होता; और न्यायियों से दण्ड पाने के योग्य अधर्म का काम होता; [12]क्योंकि वह ऐसी आग है जो जलाकर भस्म कर देती है, और वह मेरी सारी उपज को जड़ से नष्ट कर देती है।"

आयतें 9, 10. स्त्री (*'ishshah, इशशाह*) आयत 1 वाली "कुंवारी" (*b^ethulah, बेथुलाह*) के विपरीत विवाहित महिला की बात है। "मोहित" (*'arab, आराब*) होना किसी पर अचानक आक्रमण करने के लिए घात लगाने की एक सैनिक अभिव्यक्ति है। इस शब्द का अर्थ पड़ोसी के अपने घर से निकलने की बाट जोहते रहना है ताकि उसकी पत्नी के साथ व्यभिचार किया जा सके। यह पड़ोसी और अपनी पत्नी दोनों के विरुद्ध पाप होगा। अब्राहम के समय में भी मिस्र के फिरौन (उत्पत्ति 12:18–20) और गरार के राजा अबीमेलेक (उत्पत्ति 20:9) को व्यभिचार के पाप का पता था। यह परमेश्वर के विरुद्ध भी पाप है (उत्पत्ति 39:9; निर्गमन 20:14)।

यदि अय्यूब व्यभिचार का दोषी होता तो उसने अपनी पत्नी किसी दूसरे को सौंप देनी थी। चक्की पीसने का काम अय्यूब के बिल्कुल छोटे दास किया करते थे (निर्गमन 11:5; यशायाह 47:2)। कुछ टीकाकारों का मानना है कि **पीसे** शब्द में यौन सम्बन्ध का संकेत है; दूसरी पंक्ति में **पराए पुरुष उसको भ्रष्ट करें** निश्चित रूप से है (देखें TEV; NIV; NJB; NCV; NLT)। ऐसी परिस्थितियों न केवल अय्यूब की पत्नी बल्कि अय्यूब के लिए भी शर्म की बात होनी थी (देखें 2 शमूएल 12:11)।

आयतें 11, 12. यह आयत व्यभिचार को **महापाप** (*zimmah, ज़िम्माह*) बताते हुए इसे बहुत खतरनाक बताती है। हार्टले ने लिखा है, "यह इब्रानी शब्द अहिंसक, ओछे काम (भजन संहिता 26:10; न्यायियों 20:6), विशेषकर घिनौने शारीरिक पाप जैसे सगे सम्बन्धियों में शारीरिक सम्बन्ध और वेश्यावृति (लैव्यव्यवस्था 18:17; 19:29; 20:14) या दुराचारी कामों को दर्शाता है (यिर्मयाह 13:27; यहेजकेल 16:27, 43, 58; 22:9, 11; 23:21, 27)।"[8] यदि अय्यूब ने व्यभिचार किया था तो उस पर उस महिला के पति की ओर से मुकद्दमा किया गया होता और स्थानीय **न्यायियों** से कड़ा दण्ड मिला होता।

शारीरिक वासना जो व्यभिचार का कारण बनती है की तुलना विनाशकारी **आग** से की गई है (देखें नीतिवचन 6:27–29)। अय्यूब ने कहा कि यह आग **भस्म कर देती** है यानी यह मृत्यु या विनाश का कारण बनती है (देखें 26:6; 28:22)। "महापाप" ने **सारी उपज को जड़ से नष्ट कर** देना था। यह व्यक्ति की अपनी विरासत को नष्ट कर देगा।

दासों के साथ अय्यूब का व्यवहार (31:13–15)

[13]"जब मेरे दास या दासी ने मुझ से मेरी शिकायत की, तब यदि मैं ने उनका हक मार दिया हो; [14]तो जब ईश्वर उठ खड़ा होगा, तब मैं क्या करूँगा? जब वह आएगा तब मैं क्या

उत्तर दूँगा? [15]जिसने मुझे गर्भ में बनाया क्या वही उसका भी बनानेवाला नहीं? क्या एक ही ने हम दोनों की सूरत गर्भ में न रची थी?''

''इस भाग में दयापूर्ण सदाचार को दिखाया गया है जो प्राचीन जगत में कहीं नहीं मिलता।''[9] प्राचीनकाल के कानून के कई नियम दासों के साथ व्यवहार से सम्बन्धित थे,[10] पर इनमें से कोई भी अय्यूब के परोपकारी सदाचार के साथ मेल नहीं खाता।

आयतें 13-15. अय्यूब ने बताया कि **दास** हों **या दासी** वह अपने सब दासों के साथ न्यायपूर्वक व्यवहार करता था। यदि वे उसके विरुद्ध **शिकायत** करते तो वह उस पर विचार करता। अय्यूब ने माना कि उसे अपने कामों के लिए **ईश्वर** को **उत्तर** देना था। वह यही समझता था कि वही परमेश्वर **जिसने** उसे **गर्भ में बनाया**, वही उसके दासों का **बनाने वाला** भी था। सुलैमान ने कहा, ''धनी और निर्धन दोनों एक दूसरे से मिलते हैं; यहोवा उन दोनों का कर्त्ता है'' (नीतिवचन 22:2)। पौलुस ने एथेंस के दार्शनिकों से कहा:

> ''[परमेश्वर] ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय और निवास की सीमाओं को इसलिये बांधा है, कि वे परमेश्वर को ढूंढें, कदाचित उसे टटोलकर पाएं, तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं। क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, 'हम तो उसी के वंशज हैं''' (प्रेरितों 17:26-28)।

कंगालों के लिए अय्यूब का परोपकार (31:16-23)

[16]''यदि मैं ने कंगालों की इच्छा पूरी न की हो, या मेरे कारण विधवा की आँखों में कभी निराशा छाई हो, [17]या मैं ने अपना टुकड़ा अकेला खाया हो, और उसमें से अनाथ न खाने पाए हों, [18](परन्तु वह मेरे लड़कपन ही से मेरे साथ इस प्रकार पला जिस प्रकार पिता के साथ, और मैं जन्म ही से विधवा को पालता आया हूँ); [19]यदि मैं ने किसी को वस्त्रहीन मरते हुए देखा, या किसी दरिद्र को जिसके पास ओढ़ने को न था [20]और उसको अपनी भेड़ों की ऊन के कपड़े न दिए हों, और उसने गर्म होकर मुझे आशीर्वाद न दिया हो; [21]या यदि मैं ने फाटक में अपने सहायक देखकर अनाथों के मारने को अपना हाथ उठाया हो, [22]तो मेरी बाँह कन्धे से उखड़कर गिर पड़े, और मेरी भुजा की हड्डी टूट जाए। [23]क्योंकि परमेश्वर के प्रताप के कारण मैं ऐसा नहीं कर सकता था, क्योंकि उसकी ओर की विपत्ति के कारण मैं भयभीत होकर थरथराता था।''

विधवाओं, अनाथों और कंगालों की देखभाल पुराने नियम में परमेश्वर को सबसे पसन्द थी। व्यवस्था, नबी और भजनों की पुस्तक सभी उनके साथ उचित व्यवहार के लिए चिंता को दिखाते हैं।

आयतें 16, 17. एलीपज ने अय्यूब पर दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करने का आरोप लगाया था (22:5-9)। अय्यूब ने इस आरोप को सिरे से खारिज किया क्योंकि वह **कंगालों**, **विधवा**, और **अनाथ** (''बिना बाप''; NIV; NJPSV) की सहायता करता था। वह भोजन, कपड़ा

और मकान सहित उनके जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करता था। उसके **कारण विधवा की आखों में कभी निराशा** नहीं आती थी, यानी निराशा में जीवन जीना नहीं होता था (TEV; NCV; NLT)।

आयत 18. कुछ अन्य संस्करणों (NASB; KJV; NKJV; ASV; RSV) के साथ साथ NASB में इस आयत को कोष्ठक में रखा गया है। अय्यूब अनाथों के साथ ऐसे पेश आता था जैसे वह उसके अपने ही बच्चे हों यानी वह बिना बाप के लोगों का **पिता** बन जाता था। **मेरे लड़कपन ही से** और **जन्म ही से** को अतिश्योक्ति समझा जाना चाहिए (देखें भजन संहिता 22:10; 51:5; 58:3; 71:6)। ''जन्म ही से'' मूलतया, ''अपनी माता की कोख ही से'' है।

आयतें 19, 20. अय्यूब उनका बड़ा ध्यान रखता था जिनके पास पर्याप्त **वस्त्र** या **ओढ़ने को** नहीं होता था। उसकी **भेड़ों** की ऊन जिनकी गिनती 7,000 थी (1:3) सर्दी के मौसम में उन्हें गरमायश देने के लिए दी जाती थी। बदले में वे लोग अय्यूब की करुणा के लिए उसे **आशीर्वाद** देते थे। (हिंदी बाइबल में नीचे टिप्पणी में दिया गया **कमर** शब्द अंगांगिवाचन है – अनुवादक।) शरीर के उस भाग के रूप में जिसे गर्मी मिली है, यह पूरे शरीर को दर्शाता है।

आयत 21. यह आयत नगर के प्राचीनों द्वारा जो **फाटक में** इकट्ठा होते थे सुलझाए जाने वाले अदालती मामलों के सम्बन्ध में है (29:7 पर टिप्पणियां देखें)। अय्यूब ने **अनाथों के मारने को अपना हाथ** नहीं **उठाया** था। क्रिया शब्द ''उठाया'' का अनुवाद *nup* (*नूप*) से किया गया है जिसका अर्थ यहां पर ''आगे पीछे हिलाना'' है।[11] विलियम डी. रेबर्न ने कहा है कि इस वाक्यांश का अर्थ ''धमकी की मुद्रा में किसी पर हाथ हिलाना'' है।[12] रॉबर्ट एल. आल्डन ने लिखा है, ''किसी को सही सही पता नहीं है कि इस आयत वाली मुद्रा का क्या अर्थ है, परन्तु न्यायियों द्वारा हाथ ऊपर करके मत दिया जाता हो सकता है, या यह अभियुक्त के विरुद्ध पक्ष देने के लिए दर्शकों को इशारा करने का तरीका हो सकता है।''[13] जो भी हो, अय्यूब यह दावा कर रहा था कि समाज के अगुवे के रूप में उसने किसी निर्बल को न्याय से वंचित करके अपने पद का दुरुपयोग नहीं किया था।

आयत 22. यह पद्य (31:16–23) जटिल ''यदि ... तो'' वाक्य है। ''यदि'' वाक्य खण्ड पिछली आयतों में मिलते हैं जहां आयत 22 ''तो'' वाक्य खण्ड का काम करती है। अध्याय की ''तो'' वाले अन्य खण्डों की तरह (31:8, 10, 40), यह आयत भी दण्ड देने को दिखाती है। दण्ड अपराध के साथ मेल खाना होता था; वही **बांह** जो अय्यूब ने किसी असहाय के विरुद्ध उठाई थी, **नरट से टूट** (हिंदी बाइबल में नीचे टिप्पणी में गया है – अनुवादक) जानी थी जिससे उसने बलहीन हो जाना था (देखें भजन संहिता 10:15; 37:17)।

आयत 23. ''क्योंकि परमेश्वर के प्रताप के कारण मैं ऐसा नहीं कर सकता था, क्योंकि उसकी ओर की विपत्ति के कारण मैं भयभीत होकर थरथराता था।'' अय्यूब ने दावे से कहा कि वह दूसरों के साथ व्यवहार करते हुए परमेश्वर की पवित्रता को ध्यान में रखता था। वह गलत **नहीं कर सकता था**। इससे उसे धार्मिकता का पीछा करने और बुराई से दूर रहने की प्रेरणा मिलती। यही नियम हमारे मसीही जीवन में हमारा मार्गदर्शक है। पौलुस ने आग्रह किया:

> हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उन की आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करने वालों के समान दिखाने के लिए नहीं, परन्तु मन की सीधाई

> और परमेश्वर के भय से। और जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझ कर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते हो (कुलुस्सियों 3:22, 23)।

दासों और स्वामियों दोनों को याद दिलाया गया कि ''उस सेवा को मनुष्यों की नहीं, परन्तु प्रभु की जानकर सुइच्छा से करो'' (इफिसियों 6:7)।

अय्यूब की सम्पत्ति या मूर्तियों के बजाय परमेश्वर पर निर्भरता (31:24-28)

[24]''यदि मैं ने सोने का भरोसा किया होता, या कुन्दन को अपना अपारा कहा होता, [25]या अपने बहुत से धन और अपनी बड़ी कमाई के कारण आनन्द किया होता, [26]या सूर्य को चमकते या चन्द्रमा को महाशोभा से चलते हुए देखकर [27]मैं मन ही मन मोहित हो गया होता, और अपने मुँह से अपना हाथ चूम लिया होता; [28]तो यह भी न्यायियों से दण्ड पाने के योग्य अधर्म का काम होता; क्योंकि ऐसा करके मैं ने सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर का इन्कार किया होता।''

आयतें 24, 25. अय्यूब इस बात पर अड़ा रहा कि उसने अपने अपारा **धन** पर **भरोसा** नहीं रखा था। धन अपने आप में बुरा नहीं है परन्तु ''रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए बहुतों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दु:खों से छलनी बना लिया है'' (1 तीमुथियुस 6:10)। हार्टले ने कहा है,

> धन अपने स्वामी को उसमें भरोसा रखने, उस पर मन लगाने के लिए आकर्षित करता है, क्योंकि उसके होने से शक्ति, यश प्राप्त होता और तंगी से मुक्ति मिलती है। धन और अधिक धन पाने की ज़बर्दस्त प्यास जगाता है [सभोपदेशक 5:10]। जिस कारण धनवान लोग अपनी सम्पत्ति को बढ़ाने के लिए अपने कौशल तथा प्रभाव का इस्तेमाल करते हैं, जो आम तौर पर शक्तिहीनों या कंगालों को दबोचकर होता है।[14]

आयतें 26-28. अय्यूब ने इस बात से इनकार किया कि उसने कभी तेज चमकते **सूर्य** को या **चंद्रमा** को उसकी शोभा में माथा टेका हो। अपने मुंह से **हाथ चूमकर** उनकी ओर करना आदर का एक कार्य था (देखें 1 राजाओं 19:18; होशे 13:2)। आकाशीय पिंडों की पूजा मानवीय इतिहास के जितनी ही पुरानी है। सुमेर में (मसीह से तीन हज़ार वर्ष पूर्व), ऐसी पूजा के विवरणों का पता चलता है। ऊर में जो कि अब्राहम का प्राचीन नगर था, चंद्र देवता सिन (जिसे नन्ना भी कहा जाता है) प्रधान देवता था।

आकाशीय पिंडों को दिया गया आदर **परमेश्वर** का जो उनसे **सर्वश्रेष्ठ** था इनकार था। यह ''सृजनहार को छोड़कर सृजी हुई वस्तुओं'' की पूजा करना था (रोमियों 1:25; NIV)। पवित्र शास्त्र में आकाशीय पिंडों की पूजा की बार बार निंदा की गई है (व्यवस्थाविवरण 4:19; 17:3; 2 राजाओं 21:3, 5; 23:5; यिर्मयाह 8:2; 19:13; यहेजकेल 8:16; सपन्याह 1:5)।

लोगों के साथ अय्यूब के नैतिक सम्बन्ध (31:29–37)

29"यदि मैं अपने बैरी के नाश से आनन्दित होता, या जब उस पर विपत्ति पड़ी तब उस पर हँसा होता; 30(परन्तु मैं ने न तो उसको शाप देते हुए, और न उसके प्राणदण्ड की प्रार्थना करते हुए अपने मुँह से पाप किया है); 31यदि मेरे डेरे के रहनेवालों ने यह न कहा होता, 'ऐसा कोई कहाँ मिलेगा, जो इसके यहाँ का मांस खाकर तृप्त न हुआ हो ?' 32(परदेशी को सड़क पर टिकना न पड़ता था; मैं बटोही के लिये अपना द्वार खुला रखता था); 33यदि मैं ने आदम के समान अपना अपराध छिपाकर अपने अधर्म को ढाँप लिया हो, 34इस कारण कि मैं बड़ी भीड़ से भय खाता था, या कुलीनों की घृणा से डर गया यहाँ तक कि मैं द्वार से बाहर न निकला – 35भला होता कि मेरा कोई सुननेवाला होता! (सर्वशक्तिमान अभी मेरा न्याय चुकाए! देखो मेरा दस्तखत यही है)। भला होता कि जो शिकायतनामा मेरे मुद्दई ने लिखा है वह मेरे पास होता! 36निश्चय मैं उसको अपने कन्धे पर उठाए फिरता; और सुन्दर पगड़ी जानकर अपने सिर पर बाँधे रहता। 37मैं उसको अपने पग पग का हिसाब देता; मैं उसके निकट प्रधान के समान निडर जाता।"

आयतें 29, 30. अय्यूब बदला लेने वाला व्यक्ति नहीं था। अपने **बैरी** की बर्बादी पर उसने कभी जश्न नहीं मनाया था (देखें नीतिवचन 17:5; 24:17, 18)। "बैरी" शब्द का अनुवाद क्रिया के कृदंत रूप *śane'* (*साने*) से किया गया है; इसे अक्षरश: "मुझसे घृणा करने वाला" हो सकता था। यीशु ने अपने चेलों को सिखाया:

> "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर।' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो, जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भले और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है" (मत्ती 5:43–45)।

किसी के लिए परमेश्वर से अपने शत्रु को नाश करने के लिए कहना अनसुनी बात नहीं थी (1 राजाओं 3:11)। परन्तु अय्यूब ने उच्च मानदण्ड बनाए रखा। पौलुस ने लिखा, "अपने सतानेवालों को आशीष दो; आशीष दो स्राप न दो" (रोमियों 12:14)।

आयतें 31, 32. "यदि मेरे डेरे के रहनेवालों ने यह न कहा होता, 'ऐसा कोई कहाँ मिलेगा, जो इसके यहाँ का मांस खाकर तृप्त न हुआ हो?'" NCV में इस प्रश्न को सकारात्मक कथन में लिखा गया है, "'हर किसी ने अय्यूब के भोजन में से जी भर कर खाया है।'" अय्यूब परदेशियों को खिलाने के लिए अपनी सम्पत्ति में से दिल खोलकर देता था। भोजन में से रोटी मुख्य होती थी (31:17), जबकि "मांस" खास मौकों के लिए होता था। परन्तु राजाओं की मेज पर मांस खाना आम बात होती थी (1 राजाओं 4:22, 23; दानिय्येल 1:5, 8, 12)।

"परदेशी को सड़क पर टिकना न पड़ता था; मैं बटोही के लिये अपना द्वार खुला रखता था।" प्राचीन निकट पूर्व में अतिथि सत्कार करना एक पवित्र दायित्व माना जाता था।

इसमें ''बटोही'' के लिए भोजन और दाखरस, उसके पांव धोने के लिए पानी, रात को ठहरने के लिए आश्रय, और उसके गदहे के लिए चारा शामिल हो सकता था (उत्पत्ति 19:1-3; न्यायियों 19:16-21)। अब्राहम भी अतिथि सत्कार करता था (उत्पत्ति 18:1-8), जिसका संकेत सम्भवतया इब्रानियों 13:2 में है: ''अतिथि सत्कार करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कुछ लोगों ने अनजाने में स्वर्गदूतों का आदर सत्कार किया है।''

आयतें 33, 34. अय्यूब पाखंड नहीं करता था। वह **आदम के समान अपना अपराध छिपाकर अपने अधर्म को** छुपाने की कोशिश नहीं करता था। अय्यूब आदम के मना किए गए फल को खाने के बाद अदन की वाटिका में किए उसके कामों की बात कर रहा था (उत्पत्ति 3:8-10)।

अय्यूब को अपने किसी काम के कारण सामाजिक अपमान का कोई भय नहीं था। वे खुलेआम किए जाते थे और हर कोई जानता था। उसे **बड़ी भीड़** या **कुलीनों की घृणा** का डर नहीं था। ''कुलीनों'' का अनुवाद *mishpachah* (*मिशपाचाह*) के बहुवचन रूप से किया गया है जिसका अर्थ आम तौर पर लोगों के विशेष ''कुल'' होता है (देखें NIV)। इस संदर्भ में इस शब्द का अर्थ ''कुलीनों''[15] है जो कि अय्यूब के ''हम वतन'' थे (NEB)।

आयतें 35-37. परमेश्वर से अलग होने की अय्यूब की गहरी भावना के कारण वह पीड़ा से चिल्ला उठा। उसे लगा कि परमेश्वर उसकी प्रार्थनाओं और याचनाओं को **सुन** नहीं रहा था।

''**देखो मेरा दस्तखत यही है।**'' इब्रानी भाषा में ''दस्तखत'' शब्द *taw* (*टाव*) है और यह किसी के ''X'' या दस्तावेज को प्रमाणित करने के पहचान के चिह्न को दर्शाता है। ת (*taw, टाव*) इब्रानी वर्णमाला का अंतिम अक्षर है। प्राचीनकाल में इसका रूप अंग्रेज़ी ''X'' जैसा था। इस भाषा का इस्तेमाल करके अय्यूब अपने निर्दोष होने की पुष्टि कर रहा था जिसकी उसने साक्षी दी थी। NIV में है ''अब मैं अपनी सफ़ाई पर हस्ताक्षर करता हूं।''

''**सर्वशक्तिमान अभी मेरा न्याय चुकाए! भला होता कि जो शिकायतनामा मेरे मुद्दई ने लिखा है वह मेरे पास होता!**'' अय्यूब ने परमेश्वर से उसकी सफ़ाई देने और उसके विरुद्ध लगे आरोपों का जवाब देने को कहा। ''शिकायतनामा'' (*seper, सेपेर*) मुकदमे का न्याय करने वाले के सामने मामले को लाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला ''लिखित दस्तावेज''[16] होता था। कुछ लेखकों का मानना है कि *सेपेर* शब्द अय्यूब की रिहाई के कागजों की बात है। इस शब्द के चाहे कई अर्थ हैं (19:23 पर टिप्पणियां देखें), पर यह तथ्य कि इस दस्तावेज को अय्यूब के ''मुद्दई'' ने लिखा माना जाता है, ''शिकायतनामा'' अनुवाद सही ठहराता है।

''**निश्चय मैं उसको अपने कन्धे पर उठाए फिरता; और सुन्दर पगड़ी जानकर अपने सिर पर बाँधे रहता।**'' किसी को अपने ''कंधे'' या माथे पर रखना उस व्यक्ति को पहचान और जिम्मेदारी की भावना देता था (निर्गमन 28:12, 36, 37; व्यवस्थाविवरण 6:8; यशायाह 9:6; 22:22)। क्या सर्वनाम शब्द ''उसको'' मुद्दई की शिकायत की ओर संकेत करता है? क्या ''उस'' को अय्यूब की हस्ताक्षर की गई सफ़ाई को कहा गया है? जो भी हो अय्यूब के पास छिपाने के लिए कुछ नहीं था। जैसा कि हमने देखा है कि अय्यूब का जीवन धर्मी जीवन की खुली किताब था।

''**मैं उसको अपने पग पग का हिसाब देता; मैं उसके निकट प्रधान के समान निडर जाता।**'' रेबर्न ने लिखा है, ''कि पुराने नियम में कहीं और और किसी ने परमेश्वर के पास

प्रधान के समान जाने की बात नहीं की। यह उपमा किसी ऐसे व्यक्ति के व्यवहार को दर्शाती है जिसके पास अपनी गलती के लिए दोषी होने या हीन भावना के होने का कोई कारण नहीं है।''[17]

अय्यूब का भूमि-प्रबंधन (31:38-40)

[38]''यदि मेरी भूमि मेरे विरुद्ध दोहाई देती हो, और उसकी रेघारियाँ मिलकर रोती हों; [39]यदि मैं ने अपनी भूमि की उपज बिना मजूरी दिए खाई, या उसके मालिक का प्राण लिया हो; [40]तो गेहूँ के बदले झड़बेड़ी, और जौ के बदले जंगली घास उगे!'' अय्यूब के वचन समाप्त हुए।

आयतें 38, 39. साकार रूप का इस्तेमाल करते हुए अय्यूब ने इस बात का इनकार किया कि उसकी **भूमि** उसके **विरुद्ध दोहाई देती** थी। अपने कर्मचारियों को उचित मज़दूरी देकर उसने अपनी बड़ी भूसम्पत्ति को अच्छे से सम्भाला था (देखें याकूब 5:4)। उसने दूसरों से गुलामी नहीं करवाई थी। इसके अलावा उसने खून-खराबे से जमीन नहीं हथियाई थी (देखें 1 राजाओं 21), बल्कि इसे इसके ''स्वामियों'' से उचित दाम देकर हासिल किया था (देखें मीका 2:2)।

आयत 40. अय्यूब ने यदि उसने कोई अनुचित काम किया था, तो वह यह मानने को तैयार था कि उसकी भूमि पर कांटों और झाड़ियों का श्राप मिले (देखें 31:8, 10, 22)। बीहड़ बने या श्राप के अधीन खेतों के वर्णन के लिए ऐसी ही भाषा का इस्तेमाल किया गया है (नीतिवचन 24:30, 31; यशायाह 5:6; 34:13; होशे 9:6)।

अय्यूब के वचन समाप्त हुए। इसके साथ ही अय्यूब के वचन समाप्त हो गए। हार्टले ने कहा है, ''अय्यूब इस बात का नमूना है कि मानवीय मन को शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, आत्मिक कष्ट के हर पहलू से संघर्ष करते हुए किस प्रकार से परमेश्वर की खोज करते रहना चाहिए जबकि परमेश्वर छिपा रहता है।''[18]

प्रासंगिकता

जीने योग्य जीवन (अध्याय 31)

अपने ही सम्मान की सफ़ाई में अय्यूब ने अपनी खराई के सम्बन्ध में हिसाब ठीक किया (अध्याय 31)। अय्यूब के जीवन की बहुत अच्छी से अच्छी खूबियां हैं जिनकी हमें नकल करनी आवश्यक है। मसीही लोगों के रूप में हमें पवित्र जीवन जीने के रूप में बुलाया गया है, क्योंकि ''बिना पवित्रता के कोई प्रभु को नहीं देखेगा'' (इब्रानियों 12:14; NIV)। ये खूबियां जीने योग्य जीवन का वर्णन हैं।

शुद्ध मन (31:1-4)। अय्यूब ने कहा, ''मैं ने अपनी आँखों के साथ वाचा बाँधी है, फिर मैं किसी कुँवारी पर कैसे आँखें लगाऊँ?'' (31:1)। उसने पहले ही यह निर्णय ले लिया था कि वह आंखों की अभिलाषा का विरोध करेगा। यीशु ने हमें इसी पाप के बारे में चौकस किया (मत्ती 5:27, 28)। आज की हमारी संस्कृति में अभिलाषा से बचना एक बड़ी चुनौती है,

जिसका विवेक शराफत और शिष्टाचार के सम्बन्ध में गायब है। शायद नये चलन के प्रयास में या सुविधा के लिए कई बार मसीही लोग भी इस बात में समझौता कर लेते हैं। परन्तु किसी को भी बेशर्मी से किसी के रास्ते में रुकावट नहीं बनना चाहिए। इसके अलावा हमें दूसरों को परमेश्वर के स्वरूप में बनाई गई बहुमूल्य आत्माओं के रूप में देखने का निश्चय करना चाहिए। हम याद रखें कि परमेश्वर हमारे सारे विचारों को जानता है। हमें दाऊद के साथ प्रार्थना करनी चाहिए, "हे परमेश्वर, मेरे अंदर शुद्ध मन उत्पन्न कर और मेरे भीतर अपने आत्मा को मुझ से अलग न कर" (भजन संहिता 51:10)।

खराई (31:5-8)। अय्यूब ने दावा किया कि वह "व्यर्थ" और "कपट" से दूर रहता था (31:5)। उसने परमेश्वर से भी उसे "धर्म के तराजू में तौलने" को कहा (31:6)। हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जहां किसी की भावनाओं को ठेस न पहुंचाने या परेशानी से बचने के लिए "सफेद झूठ" बोलने को समाजिक रूप में स्वीकार किया जाता है। कुछ लोग न केवल अपने पड़ोसियों, अपने नियोक्ताओं, अपनी सरकार से बल्कि अपने निकटतम लोगों से भी यानी अपने माता-पिता, पति-पत्नी और बच्चों से झूठ बोलते हैं। "झूठ बोलने वाली जीभ" उन सात वस्तुओं में से एक है जिससे यहोवा को घृणा है (नीतिवचन 6:16, 17)। पौलुस ने हमें यह कहते हुए समझाया, "इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं" (इफिसियों 4:25)। यीशु, जो कि सत्य है (यूहन्ना 14:6) के पीछे चलने वालों का दावा करने वालों के लिए केवल सत्य के लोग होना ही उचित है।

विवाह में वफ़ादार (31:9-12)। अय्यूब ने कहा कि वह "किसी स्त्री पर मोहित" नहीं हुआ था, न ही वह "अपने पड़ोसी के द्वार पर घात पर बैठा" था (31:9)। अन्य शब्दों में वह अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य रहा था। दम्पत्तियों के लिए आज विश्वासयोग्य बने रहने का थोड़ा सामाजिक दबाव है, इस कारण मसीही लोगों के लिए अपने विवाह की रक्षा के लिए अधिक सावधानी बरतनी आवश्यक है। व्यभिचार के पाप को आम तौर पर "प्रेम सम्बन्ध" शब्द के साथ कम करके बताया जाता है; नॉवलों, धारावाहिकों, हास्य कार्यक्रमों तथा फिल्मों में इसे प्रेमपूर्वक ढंग से दिखाया जाता है। परन्तु अय्यूब ने इसे "महापाप" कहा (31:11)। इब्रानियों के लेखक ने कहा, "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा" (इब्रानियों 13:4)। मसीही पतियों और पत्नियों को एक दूसरे के लिए अपने प्रेम को बढ़ाने और एक दूसरे की आवश्यकताओं को पूरा करने की कोशिश करते रहना चाहिए (1 कुरिन्थियों 7:3-5)। इसके अलावा उन्हें ऐसी परिस्थितियों से बचना आवश्यक है जो उन्हें बेवफ़ाई करने की परीक्षा में डाल सकती थी (देखें नीतिवचन 6:6-27)। बूढ़े मसीही दम्पत्तियों के नमूने को देखना अच्छा है जो पचास, साठ या सत्तर से भी अधिक सालों से एक दूसरे के विश्वासयोग्य रहे हों।

अपने अधिकारियों की मानने वाले होना (31:13-15)। अय्यूब अपने दासों को प्रताड़ित नहीं करता था और न ही वह उनकी शिकायतों को अनदेखा करता था (31:13)। वह मानता था कि उसे उसी परमेश्वर ने बनाया है जिसने उन्हें भी बनाया था (13:15)। नये नियम में पौलुस ने इस नियम के बारे में लिखा है, "और हे स्वामियो, तुम भी धमकियां छोड़कर उन के साथ वैसा ही व्यवहार करो, क्योंकि जानते हो, कि उन का और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है, और वह किसी का पक्ष नहीं करता" (इफिसियों 6:9)। उन विश्वासियों को जिनके पास आज

अधिकार है उनके साथ जो उनके अधिकार में हैं, शिष्टाचार और आदर के साथ व्यवहार करना चाहिए। हमें यह समझना आवश्यक है कि हर व्यक्ति को परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया है और उसकी दृष्टि में उसका बड़ा मोल है। दूसरों के साथ इस प्रकार से व्यवहार करने से वे मसीह में परिवर्तित हो सकते हैं।

कंगालों के प्रति दयालु (31:16–23)। अय्यूब ने कंगालों, विधवाओं और अनाथों की सहायता करने की उपेक्षा नहीं की थी। वह यह सुनिश्चित करता था कि आवास के साथ-साथ उन्हें भोजन और कपड़ा पर्याप्त मात्रा में मिले। वास्तव में यह अय्यूब की परम्परा थी (31:16–20)। मसीही लोगों से आज कंगालों और ज़रूरतमंद लोगों के प्रति दया दिखाने को कहा जाता है। नया नियम हमें जहां तक हो सके दूसरों की सहायता करने, विशेषकर विश्वासी लोगों की सहायता करने का निर्देश देता है। पौलुस ने लिखा, ''इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें, विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ'' (गलातियों 6:10)।

परमेश्वर के वफ़ादार (31:24–28)। अय्यूब का भरोसा अपनी बड़ी सम्पत्ति में नहीं था, न ही इसके कारण उसमें घमण्ड था (31:24, 25)। अन्य शब्दों में वह अपनी सम्पत्ति को देवता के रूप में नहीं पूजता था। अय्यूब आकाशीय पिंडों की पूजा भी नहीं करता था, जैसा कि निकटपूर्व समाज में आम था (31:26–28), या सृजनहार को छोड़कर सृजी हुई वस्तुओं की सेवा नहीं करता था (देखें रोमियों 1:25)। आम तौर पर यह कहा जाता है कि परमेश्वर की जगह हम जिस भी चीज को रख देते हैं वह हमारा ईश्वर बन जाती है और यह बिल्कुल सही है। क्या कोई ऐसी चीज़ या कोई व्यक्ति ऐसा है जिसे हम अपने सृजनहार से बढ़कर प्रेम करते हैं? सम्पत्ति के लिए मनुष्य के प्रेम के कारण यीशु ने कहा, ''परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज'' है (मरकुस 10:25)। उसने यह भी बताया कि ''जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं'' (मत्ती 10:37)।

अपने साथी के साथ अच्छा (31:29–37)। अय्यूब अपने बैरियों के नाश पर आनन्दित नहीं होता था या उन्हें श्राप नहीं देता था (31:29, 30)। इसी प्रकार से नया नियम हम से अपने बैरियों से प्रेम करने और उनके लिए प्रार्थना करने को कहता है (मत्ती 5:43–45)। हमें उन्हें श्राप नहीं देना चाहिए बल्कि उन्हें आशीष देनी चाहिए (रोमियों 12:14)। शायद ऐसा करके हम उन्हें बैरी से मित्र बना पाएं। इसके अलावा जिनके लिए हम प्रार्थना करते हैं उनके साथ नाराज़ रहना कठिन है।

अय्यूब दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करने के बजाय परदेशियों को भोजन और खाना और रहने को देकर अतिथि सत्कार करता था (31:31, 32)। इब्रानियों के लेखक ने कहा है, ''अतिथि सत्कार करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कुछ लोगों ने अनजाने में स्वर्गदूतों का आदर-सत्कार किया है'' (इब्रानियों 13:2)। बहुत सम्भावना है कि यह उत्पत्ति 18 और 19 वाली अब्राहम और लूत की कहानियों की बात है। यह तो शायद न हो कि हम स्वर्गदूतों की सेवा करें, पर यह हो सकता है कि हमें किसी दूसरे पर यीशु के प्रेम को दिखाने और उस पर अमिट छाप छोड़ने का अवसर मिल जाए।

अपने कारोबार में ईमानदार होना (31:38–40)। अय्यूब ने किसी से जबर्दस्ती जमीन नहीं हथियाई थी, न अपने कर्मचारियों का वेतन रखा था, या अपने कारोबारी साथियों के साथ

कोई छलकपट किया था (31:38, 39)। वह याकूब द्वारा बताए गए धनवानों के जैसा नहीं था: ''देखो, जिन मजदूरों ने तुम्हारे खेत काटे, उनकी वह मजदूरी जो तुमने धोखा देकर रख ली है चिल्ला रही है, और लवनेवालों की दोहाई, सेनाओं के प्रभु के कानों तक पहुंच गई है'' (याकूब 5:4)। हमें चाहिए कि हम दूसरों के साथ अपने कार्यव्यवहार में, चाहे यह गुणवत्ता की बात हो, सही दाम देने की, अपनी बात पर खरा उतरने की या कर देने की आदरयोग्य बनने का प्रयास करें।

सारांश। हमें चाहिए कि जीने योग्य जीवन पाने के लिए अय्यूब की खूबियों की नकल करने की कोशिश करें। परमेश्वर का अनुग्रह जो यीशु में दिखाया गया, हमें ऐसा जीवन जीने में सहायता कर सकता है। मसीह के बलिदान पर भरोसा करके हम कालांतर के पापों पर विजय पा सकते हैं (रोमियों 6:1–4; 1 यूहन्ना 1:7, 9)। हम नये साहस और नई सामर्थ के साथ प्रतिदिन जी सकते हैं।

डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 389–90. [2]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर–वर्सिटी प्रैस, 1974), 238. [3]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:500–1. [4]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 409. [5]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 1:636. [6]हार्टले, 411. [7]द *पेपिरस ऑफ़ एनी* में इस दृश्य का एक उदाहरण है। [8]हार्टले, 413. [9]एंडरसन, 242. [10]उदाहरण के लिए, *COS*, 2:332–53, 410–14 में देखें, ''द आलज़ ऑफ़ एशनुन्ना,'' ''द लाअज़ ऑफ़ हम्मुरबी,'' और ''द लाअज़ ऑफ़ लिपिट–इश्थर'' अनु. मार्था रॉठ।

[11]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 1:682. [12]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 574. [13]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 304. [14]हार्टले, 418. [15]कोहलर और बामगार्टनर, 1:650–51. [16]वहीं, 1:766. [17]रेबर्न, 586. [18]हार्टले, 426.